गुजरात फोरेस्ट रेंजर्स कॉलेज, राजपीपला, गुजरात के रेंज फोरेस्ट आफिसर्स प्रशिक्षणार्थियों (Range Forest Officer Trainees), के दल का आफरी भ्रमण

दिनांक 12.8.2016 को गुजरात फोरेस्ट रेंजर्स कॉलेज, राजपीपला, गुजरात के 44 रेंज फोरेस्ट आफिसर्स प्रशिक्षणार्थियों (Range Forest Officer Trainees) के दल ने श्री ए. के. पटेल, उप वन संरक्षक एवं वाइस प्रिंसीपल (Vice Principal), के नेतृत्व में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का भ्रमण किया । संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. त्रिलोक सिंह राठौड़ ने भ्रमण दल को पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से संस्थान तथा संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों एवं विकसित तकनीक की जानकारी दी । डॉ. राठौड़ ने अपने प्रस्तुतीकरण में कृषि वानिकी, टिब्बा स्थिरीकरण, जल एवं मृदा संरक्षण, जल प्रबन्धन इत्यादि से संबंधित शोध गतिविधियों की जानकारी दी । संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने प्रशिक्षणार्थी रेंज फोरेस्ट आफिसर्स को भूमि का अवक्रमण (Land degradation), कृषि वानिकी के लाभों इत्यादि की जानकारी दी । भ्रमणकारी दल की जिज्ञासाओं का समाधान प्रश्नोत्तर के माध्यम से भी किया गया ।

इससे पूर्व भ्रमणकारी दल को संस्थान की कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमा राम चौधरी, भा.व.से. ने विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण करवाया । प्रयोगशालाओं के भ्रमण के दौरान बीज परिशोधित करने के उपकरण, अकाष्ठ वन उपज प्रयोगशाला में अकाष्ठ वन उपज से संबंधित शोध कार्यो की जानकारी, वृक्षों के रोगों से संबंधित शोध कार्यो, आणविक जैव विज्ञान से संबंधित शोधकार्य, उत्तक संवर्धन इत्यादि से संबंधित शोध गतिविधियों इत्यादि की जानकारी विभिन्न शोधकर्त्ताओं ने दी ।

भ्रमणकारी दल ने संस्थान के निर्वचन एवं विस्तार केन्द्र का भी भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित विभिन्न शोध गतिविधियों से संबंधित जानकारी एवं सामग्री का अवलोकन किया । यहाँ श्री चौधरी ने भ्रमणकारी दल को अवक्रमित पहाड़ियों के पुनर्वासन, टिब्बा स्थिरीकरण, जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन, कृषि वानिकी इत्यादि विषयों से संबंधित जानकारी उपलबध करायी । श्री चौधरी ने वृक्षों से होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों की जानकारी देते हुए पर्यावरण संरक्षण आदि की भी चर्चा की ।

कार्यक्रम का समन्वयन वैज्ञानिक 'डी' श्रीमती भावना शर्मा ने किया । भ्रमण कार्यक्रम में श्री रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक-प्रथम, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक व श्री तेजाराम का सहयोग रहा ।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद